बाइबल टीचर

वर्ष 20 | जनवरी 2023 | अंक 2

सम्पादकीय

कलीसिया का कार्य

बाइबल हमें बताती है कि यीशु ने जिस कलीसिया को बनाया उसके द्वारा उसकी महिमा हो। आज यीशु की कलीसिया को हम पूरे संसार में देख सकते हैं। यीशु की कलीसिया का सिर केवल वह स्वयं है। कोई भी व्यक्ति विशेष कलीसिया का मुखिया नहीं हो सकता। यह कलीसिया केवल नये नियम अनुसार चलती है तथा किसी भी व्यक्ति को इसके लिये अपने निजि विचार या तरीकों की आवश्यकता नहीं है। आज कई लोग मसीह की कलीसिया को अपने रीति रिवाजों से चलाने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु परमेश्वर ऐसा नहीं चाहता कि हम अपने विचारों से कलीसिया के कार्यों को करें। क्योंकि कलीसिया मनुष्यों के समुह से बनी है इसलिये इसमें कहीं न कहीं इन्सानी कमज़ोरियां आ जाती हैं। परन्तु यह कमज़ोरियां तभी आती हैं जब कलीसिया के लीडर या अगुवाई करनेवाले कमज़ोर हो जाते हैं। आज कलीसिया को ज़रूरत है शेरदिल सदस्यों और अगुवों की, जो पत्थर की तरह मज़बूत हों (1 पतरस 2:5)।

हमारा मलयुद्ध लोहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। (इफि. 6:12-13)। शैतान का कार्य है कि कलीसिया में गड़बड़ियां या समस्याएं उत्पन्न करे। (1 पतरस 5:8)। यदि प्रत्येक सदस्य बाइबल का अध्ययन करके उसके अनुसार चलें तो आज बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो जायेगा। कलीसिया में आत्मिकता लाना बहुत आवश्यक है। कभी भी कलीसिया को हल्के ढ़ंग से न लें। बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं कि कलीसिया ऐसा स्थान है जहां हमें बहुत सारे भौतिक लाभ मिल सकते है। कई लोग कलीसिया से इसलिये जुड़ जाते हैं क्योंकि उनकी नियत में खोट होता है। उनकी नियत साफ़ नहीं होती। कलीसिया को यीशु ने इसलिये बनाया था ताकि उसमें होकर हम उद्धार पा सकते हैं। कलीसिया

उद्धार पाये हुये लोगों की मण्डली है। यह किसी प्रकार का कोई क्लब नहीं है कि जहां मौज मस्ती होती है या हमें कोई लाभ मिलेगा या पैसे से कोई सहायता मिलेगी। यह सब अनुचित धारणाएं हैं। कई बार कई लोग यह सोचते हैं कि कलीसिया में मनोरंजन के कार्यक्रम होने चाहिए या भोजन आदि की व्यवस्था होनी चाहिए। यह सब संसारिक दृष्टिकोण है।

यदि आप कलीसिया को समझ नहीं पा रहे हैं तो अपनी बाइबल को पढ़े। बाइबल हमें यह बताएगी की कलीसिया क्या है और कलीसिया का कार्य क्या है?

बाइबल में हम पढ़ते हैं कि कुछ कलीसियाएं पैसे से मज़बूत थीं तथा कुछ निर्धन थी। यीशु ने कुछ कलीसियाओं से कहा था कि पैसे से तुम सही हो लेकिन विश्वास में तुम निर्धन हो और कुछ कलीसियाएं गरीब थी, परन्तु अपने विश्वास में दृण थीं। आप इनके बारे में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के दो, तीन अध्यायों में पढ़ सकते हैं। किसी भी कलीसिया को पैसे के कारण विश्वास में कमज़ोर नहीं होना चाहिए। यदि सदस्य विश्वास में मज़बूत है तब उन्हें कोई वस्तु नहीं हिला सकती।

हम सब मसीही मिलकर परमेश्वर की सेवा करते हैं। हर रविवार को एक साथ मिलकर आराधना करते हैं। सारी कलीसिया मिलकर उसकी सेवा करती है। हम सब को एक बात सोचनी चाहिए कि हम कलीसिया के लिये क्या कर सकते हैं? कई लोग यह सोचते हैं कि कलीसिया से हमें क्या लाभ मिल सकता है? पहली शताब्दी की कलीसिया अपनी गरीबी से भी प्रभु के लिये उसके कार्य के लिये तथा प्रचार के लिये देती थी। (2 कुरि. 8 अध्याय)। वे लोग अपने कंगालपन से भी कलीसिया के कार्य के लिये देते थे।

आज कई लोग कलीसिया के कार्य को नहीं समझते। लोग सोचते हैं कि कलीसिया का अर्थ है, कि यह कोई संस्था या एन.जी.ओ. है और इससे हमें कई प्रकार के लाभ मिलेंगे। कलीसिया का विशेष कार्य है सुसमाचार को दूसरों तक लेकर जाना। यीशु ने कहा था सब जातियों को प्रचार करो। (मत्ती 28:18-19; मरकुस 16:15)। चर्च का कार्य स्कूल खोलना नही या हस्पताल खोलना नहीं न कोई व्यापार करना है बल्कि प्रचार का कार्य करना है। यह सब कार्य अच्छे हैं परन्तु कलीसिया का उद्देश्य भिन्न है।

कई बार कलीसिया गरीब सदस्यों की भी सहायता करती है। पहिली शताब्दी के मसीही लोग अपना समान बेचकर गरीब मसीहियों की सहायता करते थे। (प्रेरितों 2:45)। कलीसिया विधवाओं की सहायता करती थी परन्तु जिनके बच्चे कमाने में समर्थ थे उनकी नहीं, केवल उन विधवाओं की जो वास्तव में असमर्थ थीं। कलीसिया अनाथों की भी सहायता करती थी। यह पैसा सदस्यों के द्वारा आता था। (कुरि. 16:1-2; 2 कुरि. 9:6,7)। सब सदस्य अपनी आमदनी अनुसार खुशी से चंदा देते हैं। चंदा कलीसिया के दो तीन लोगों द्वारा गिना जाता है तथा बैंक में जमा कराया जाता है और आवश्यकता अनुसार खर्च किया जाता है, क्योंकि यह पैसा कलीसिया का है। इसलिये बड़ी ही ईमानदारी से इसे इस्तेमाल किया जाना चाहिए। क्योंकि सन्डे के दिन कलीसिया द्वारा इकट्ठा हुआ चंदा प्रभु का है और इसलिये इसकी देख-रेख करनेवाले बड़े ही जिम्मेदार सदस्य होने चाहिए। हमें परमेश्वर के कार्य के लिये दिल खोलकर चंदा देना चाहिए। (2

कुरि. 8:8)। जितना हम परमेश्वर से तथा कलीसिया से प्रेम करेंगे उतना ही दिल खोलकर अपना चंदा देंगे। चंदे के लिये पहिले से ही आराधना में आने से पहिले मन बना लें तथा जितना चंदा जो आपने डालना है अलग से निकालकर रख लें।

कई कलीसियाऐं मैम्बरशिप फीस लेती हैं, जिसके विषय में हम कहीं भी बाइबल में नहीं पढ़ते। (2 यूहन्ना 9)। कभी भी किसी को बपतिस्मा लेने तथा चंदा देने के लिये दबाब नहीं डालना चाहिए। परमेश्वर इस बात को पसंद नहीं करता। अपनी इच्छा से चंदा देना चाहिये। (2 कुरि. 8:3)।

अंत में मैं यह भी बताना चाहता हूं कि हम सबके अपने परिवार हैं और उनकी देखभाल करना हमारा कर्तव्य है। कभी यह न सोचे कि कलीसिया सहायता करेगी। हां, इसमें कोई संदेह नहीं कि कलीसिया गरीबों की मदद करती है। उसी प्रकार से जब परिवार में किसी की मृत्यु हो जाती है तब यह कलीसिया का कार्य नहीं है कि उसके अन्तिम संस्कार का खर्चा कलीसिया करेंगी। आज हमें यह समझने की आवश्यकता है कि कलीसिया का कार्य क्या है? यह जिम्मेवारी उस परिवार की है जिनके परिवार में उस सदस्य की मृत्यु हुई है। कई बार ऐसा होता है कि कलीसिया का कोई सदस्य बहुत गरीब है और गरीब परिवार के पास कुछ भी नहीं है तब इस स्थिति में कुछ सदस्य या कलीसिया उनकी सहायता करती है। परन्तु केवल उन्हीं की जो असमर्थ हैं। अपने परिवार की देखभाल करना हमारा कार्य है, कलीसिया का नहीं। (1 तीमु. 5:8)। पौलूस कहता था कि मैं कभी किसी कलीसिया पर भार नहीं बना।

अपने कामों से नहीं, पर आज्ञा मानने के द्वारा

सनी डेविड

बाइबल के नए नियम में यूहन्ना नामक पुस्तक के नौवें अध्याय में हम एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं जो अपने जन्म से ही अंधा था। लिखा है, कि जब यीशु और उसके चेले यहूदियों के मंदिर में से निकलकर जा रहे थे, तो मार्ग में उन्होंने एक अंधे को देखा, जो मन्दिर के बाहर बैठकर भीख मांगा करता था। प्रभु यीशु के चेलों ने यीशु से पूछा, कि वह अंधा क्यों जन्मा है? क्या इसने या इसके माता-पिता ने कोई पाप किया था? प्रभु ने उन्हें जवाब देकर कहा था कि वह अंधा इसलिये नहीं जन्मा कि किसी ने कोई पाप किया था। फिर प्रभु ने भूमि पर थूका और मिट्टी सानी और मिट्टी को उस अंधे की आंखों पर लगाकर उस से कहा, कि पास में ही बने शीलोह के कुन्ड में जाकर धो ले। और लिखा है, कि वह व्यक्ति उठकर गया और जाकर अपनी आंखों को धोया, और वह तुरन्त देखने लगा। इसमें कोई संदेह नहीं, और आप कल्पना करके सोच सकते हैं, कि उस मनुष्य के आनन्द का ठिकाना नहीं रहा होगा। वह जन्म ही से अंधा था, पर अब वह देख रहा था। इससे पहले लोगों ने उसे

बताया होगा कि वह वस्तु ऐसी लगती है, और यह चीज वैसी लगती है। पर अब वह प्रत्येक वस्तु को स्वयं अपनी ही आंखों से देख सकता था। पहले वह अंधकार में था, पर अब वह सब कुछ देख रहा था।

पर एक खास बात जो इस घटना से हमें सीखने को मिलती है, वह यह है, कि जब प्रभु ने उस अंधे को ठीक किया था, अर्थात उसे चंगाई दी थी, तो प्रभु ने उससे कहा था, कि जाकर अपनी आंखों को धो ले। और इससे भी पहले, प्रभु ने भूमि पर थूककर उससे मिट्टी सानी थी और उस मिट्टी को प्रभु ने उसकी आंखों पर लगाया था। अब हम सब यह जानते हैं, और हम यह मानते हैं, कि प्रभु ने जब उस अंधे को देखा था, तो प्रभु बिना कुछ किये भी उसे चंगा कर सकता था। यानि यदि यीशु कहता, कि तू चंगा हो जा तो वह तत्काल चंगा हो जाता। क्योंकि न तो उस मिट्टी में कोई ताकत थी जिसे प्रभु ने उसकी आंखों पर लगाया था। और न ही शीलोह के कुन्ड के उस पानी में कोई ऐसी सामर्थ थी, जिस से प्रभु ने उसे आंखें धोने को कहा था। तो फिर प्रभु ने ऐसा क्यों किया? क्यों उसने थूककर मिट्टी सानी और उसकी आंखों पर लगाकर उसे आंखें धोने की आज्ञा दी? इसका केवल एक ही कारण था। और वह कारण यह था, कि प्रभु इसके द्वारा अपने चेलों को जो उस समय प्रभु के साथ थे, और उस अंधे व्यक्ति को यह सिखाना चाहता था, कि परमेश्वर का वरदान मनुष्य को केवल तब ही मिलता है जब मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा को मानता है। क्योंकि जब मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा को मानता है, चाहे वह आज्ञा मनुष्य को मूर्खतापूर्ण ही क्यों न लगे, तो उस आज्ञा को मानने के द्वारा मनुष्य यह व्यक्त करता है कि वह वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास रखता है। इसलिये प्रभु यीशु ने एक बार लोगों को कहा था कि जब तुम मेरा कहना ही नहीं मानते तो मुझे हे प्रभु क्यों कहते हो? (मरकुस 6:46)।

इस बात के बाइबल में हम को अनेकों उदाहरण मिलते हैं, कि जब-जब लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा को माना था, तो परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी थी। और जब भी किसी ने परमेश्वर की आज्ञा को तुच्छ जानकर उसे नहीं माना था, तो परमेश्वर ने अपनी अप्रसन्नता को उस पर व्यक्त किया था। इस पाठ में कुछ ऐसे ही उदाहरणों को आज मै बाइबल में से आपके सामने रखने जा रहा हूं।

सबसे पहले, बाइबल में पहले शमूएल की पुस्तक के 15 अध्याय में हम एक राजा के बारे में पढ़ते हैं, जिसका नाम शाऊल था। शाऊल को परमेश्वर ने अपनी प्रजा इसराएल के ऊपर राजा नियुक्त किया था। पर जब परमेश्वर ने शाऊल को उसकी सेना के साथ अमालेक में भेजा था, ताकि शाऊल वहां जाकर परमेश्वर से बैर रखने वाले अमालेकियों को और उनकी प्रत्येक वस्तु को नाश कर दे। तो शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा को पूरी तरह से नहीं माना था। उसने जाकर अमालेक और अमालेकियों को नाश तो किया था। पर जो कुछ वहां उसे अच्छा लगा था, उन सब को वह अपने साथ ले आया था। और हम पढ़ते हैं, कि परमेश्वर शाऊल के आज्ञा न मानने के कारण उससे बड़ा ही अप्रसन्न हुआ था, और यहां तक की परमेश्वर ने शाऊल से राज्य करने का अधिकार भी छीन लिया था।

ऐसे ही, बाइबल में उत्पत्ति की पुस्तक के 22 अध्याय में हम इब्राहीम के बारे में पढ़ते हैं। इब्राहीम आरंभ में निसंतान था। पर जब वह बूढ़ा हो गया था, तो परमेश्वर की आशीष से उसके घर में एक पुत्र का जन्म हुआ था। लेकिन जब वह लड़का जवान हो रहा था, तभी परमेश्वर ने एक दिन इब्राहीम से कहा था, कि तू अपने पुत्र को एक पहाड़ पर ले जाकर मेरे लिये बलिदान कर दे। हम कल्पना करके सोच सकते हैं, कि यह सुनकर इब्राहिम का क्या हाल हुआ होगा। पर तौभी लिखा है, कि भोर होते ही इब्राहिम उठ खड़ा हुआ। उसने अपने पुत्र को भी उठाया। और अपने गदहे पर काठी बांधी और लकड़ी और छुरी आदि लेकर वह उस पहाड़ की ओर चल पड़ा जिस पर परमेश्वर ने उसे अपने पुत्र को बलि करने को कहा था। तीन दिन की यात्रा के बाद जब वे उस स्थान पर पहुंचे, और इब्राहीम ने सारी तैयारी करके जैसे ही छुरी हाथ में लेकर अपने पुत्र को परमेश्वर की आज्ञानुसार बलि करना चाहा; तभी परमेश्वर ने उसे यह कहकर रोका कि हे इब्राहीम तू अपने पुत्र को कोई हानि मत पहुंचा, क्योंकि तू ने जो अपने एकलौते पुत्र को भी मेरे लिये नहीं छोड़ा, इससे अब मैं जान गया हूं कि तू सचमुच में परमेश्वर से प्रेम करता है।

वास्तव में, सम्पूर्ण बाइबल में, आरंभ से लेकर अंत तक, इस बात को हम बार-बार देखते हैं, कि परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य से केवल यही चाहता है कि मनुष्य उसकी आज्ञा माने। क्योंकि आज्ञा मानने के द्वारा मनुष्य यह व्यक्त करता है, कि वह वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करता है। किन्तु हम यह भी देखते हैं बाइबल से, कि परमेश्वर की आज्ञाएं बड़ी ही साधारण होती है, और ऐसी प्रतीत होती हैं जैसे कि कोई मूर्खता की सी बात हो। और यही कारण है कि क्यों मनुष्य अकसर परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मानता।

इस बात का एक बड़ा ही अच्छा उदाहरण हमें नामान की घटना में मिलता है। नामान के बारे में बाइबल में दूसरे राजा की पुस्तक के पांचवे अध्याय में हम पढ़ते हैं कि नामान के शरीर पर कोढ़ के से दाग थे। वह चंगा होना चाहता था। पर सब कुछ करने के बारे भी उसे कोई लाभ नहीं हो रहा था। कि तभी उसे पता चला, कि यदि वह परमेश्वर के एक जन के पास जाएगा, तो वह परमेश्वर की ओर से उसे यह बता सकता है कि नामान को कोढ़ से शुद्ध होने के लिये क्या करना चाहिए। सो नामान अपने नौकर-चाकरों के साथ बहुत सी दान की वस्तुएं लेकर परमेश्वर के उस जन से मिलने को चला गया। परन्तु जब नामान परमेश्वर के जन के द्वार पर पहुंचा तो उसने भीतर से ही किसी के द्वारा नामान को यह कहला भेजा कि तू जाकर यरदन नदी में सात बार डुबकी लगा ले और तू चंगा हो जाएगा। लिखा है, कि यह सुनते ही नामान तो आग-बबूला हो गया। उसने कहा, कि मैंने तो यह सोचा था कि वह बाहर आकर मेरे लिये प्रार्थना करेगा, और मुझे चंगा करने के लिये कुछ करेगा। लेकिन उसने तो मुझ से कहा है, कि जाकर यरदन नदी में सात बार डुबकी लगा ले तो तू चंगा हो जाएगा। सो नामान जैसा आया था वहां से वैसा ही चला गया। लेकिन मार्ग में उसने अपना मन फिराया। और यह लौटकर यरदन नदी के पास आया, और जैसा उससे कहा गया था, उसने नदी में सात बार डुबकी लगाई। और जब उसने ऐसा किया तो परमेश्वर के

वचनानुसार वह तुरन्त चंगा हो गया।

इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। पर जो वह कहता है, उसे वैसे ही मानना चाहिए। आज परमेश्वर किसी भी मनुष्य के द्वारा हम से बातें नहीं करता है। क्योंकि आज उसकी सभी आज्ञाएं संसार के सब लोगों के लिये, उसकी पुस्तक बाइबल में लिखी हुई हैं। और परमेश्वर आज हर इंसान से हर जगह यह चाहता है कि सब लोग उसके इस सुसमाचार पर विश्वास करें, कि उसका एकलौता पुत्र यीशु मसीह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था। और उसमें विश्वास लाकर अपना मन फिराएं, और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा लें।

जिस प्रकार से नामान को परमेश्वर की आज्ञा मानने पर ही शारीरिक चंगाई मिली थी। वैसे ही यदि हम भी आज आत्मिक चंगाई अर्थात् पाप से मुक्ति पाना चाहते हैं, तो परमेश्वर की आज्ञा मानने से ही ऐसा हो सकता है। क्या आप परमेश्वर की आज्ञा मानकर अपने पापों से छुटकारा पाना चाहते हैं? इस बारे में यदि आप और अधिक जानना चाहते हैं, तो हमें अवश्य लिखकर बताएं।

कलीसिया की स्थापना

जे. सी. चोट

पिछले पाठ के अध्ययन में, यशायाह 2:2, 3, योएल 2, 28, 29, और दानिय्येल 2:44 से हमने देखा कि प्रभु के राज्य अर्थात् कलीसिया की स्थापना अन्त के दिनों में, यरूशलेम में, सामर्थ के आने पर होगी, व हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे, और उसका अन्त कभी न होगा। फिर मत्ती 16: 18; मरकुस 9:1 और लूका 24:46-49 में यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की थी कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा, व उसका आगमन सामर्थ सहित होगा, और मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार सब जातियों में, उसी के नाम से किया जाएगा। प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय को पढ़कर ज्ञात होता है कि यह सब भविष्यद्वाणियां और प्रतिज्ञाएं इसी अध्याय में पूर्ण हुईं।

जब हम प्रेरितों के काम 2 अध्याय को पढ़ते हैं, हम पाते हैं कि प्रेरित इस समय यरूशलेम में थे: "जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे। और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई, और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा

में बोल रहे हैं।" (प्रेरितों 2:1-6)। आगे हम पढ़ते हैं उन विभिन्न जाति के लोगों के विषय में जो वहां पर एकत्रित थे, "और वे सब चकित हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे कि यह क्या हुआ चाहता है? परन्तु औरों ने ठट्ठा करके कहा, कि वे तो नई मदिरा के नशे में है। पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालों, यह जान लो और कान लगा कर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी: कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे।" और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा।" (प्रेरितों 2: 17,21)।

यह बताने के बाद कि ये सब कुछ जो हो रहा था उन भविश्यद्वाणियों के अनुसार था जो पूर्व की गई थीं, पतरस ने उपदेश देना आरंभ किया। उसने बताया कि यीशु एक मनुष्य था, जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों, और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने उनके बीच उनके द्वारा कर दिखलाए। फिर, उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि वह कैसे पकड़वाया गया और अधर्मियों के हाथों से क्रूस पर चढ़ाया व मारा गया। आगे पतरस ने बताया कि उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बंधनों से छुड़ाकर जिलाया। उस बड़े जन-समूह को निश्चय दिलाने के लिये पतरस ने दाऊद का उदाहरण देकर बताया कि मसीह पृथ्वी पर रहा, मर गया, गाड़ा गया और पुनजीर्वित हो उठा, और फिर स्वर्ग में चला गया ताकि सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने हाथ बैठे। इसके साथ ही उसने कहा, "इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह है। इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं। सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी। तब सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि भाइयो, हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ। सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।" और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो

उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उनमें मिला देता था।" (प्रेरितों 2:32-41, 47)।

पूर्वोक्त विवरण में प्रभु की कलीसिया की स्थापना के विषय में बताया गया है। यहां हम स्पष्टता से देखते हैं कि सब कुछ यरूशलेम में ही घटित हुआ। पवित्र आत्मा की अद्‌भुत शक्ति प्रेरितों पर उंडेली गई। यह पहले से की गई भविष्यद्वाणी के अनुसार था। पतरस ने विशेष रूप से इस पर बल देकर कहा कि, "यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वकता के द्वारा कही गई है।" (प्रेरितों 2:16), इसलिये इसमें कुछ भी संदेह नहीं। इसके अतिरिक्त, भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि यह सब अंत के दिनों में होगा, और यहां पतरस ने कहा कि यह वही हो रहा है जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता ने पूर्व कहा था, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि स्थापना अंत के दिनों में हुई। फिर, उस दिन हर एक जाति के लोग वहां पर उपस्थित थे, व मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार प्रभु यीशु के नाम से किया गया, और लगभग तीन हजार मनुष्यों ने प्रभु का वचन ग्रहण किया, और बपतिस्मा लिया, उन्हें उद्धार मिला, व प्रभु ने उन्हें कलीसिया में मिला दिया। इसलिये, यीशु मसीह ने कलीसिया की स्थापना लगभग 33 ई. स. में की, और तभी से यह आज तक वर्तमान है।

मसीहियत पक्के चमत्कारों पर आधारित है

रोजर ई. डिक्सन

मनुष्य के बनाए धर्म आमतौर पर कुछ काल्पनिक दावों पर या गुप्त में हुए चमत्कारों पर आधारित होते हैं। यहां पर लूका हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक जबर्दस्त सफाई देता है जो मसीहियत के आरंभ और बढ़ने का उपयुक्त उत्तर देती है। यह कुछ विश्वासियों के द्वारा किए जाने वाले चमत्कारों के 'दावे' पर आधारित नहीं है। यह कुछ आरंभिक सनकियों के काल्पनिक कामों के गुप्त में होने पर आधारित धर्म नहीं है। यह कलीसिया के आलौकिक रूप में आरंभ होने का जबर्दस्त प्रदर्शन है। यीशु के आस-पास के चमत्कार और चेलों का आरंभिक काम कहीं गुप्त में नहीं हुआ था। पौलुस ने राजा अग्रिप्पा के सामने इस बात का दावा किया था, ''राजा भी जिसके सामने मैं निडर होकर बोल रहा हूं, यह बातें जानता है; और मुझे विश्वास है कि इन बातों में से कोई उससे छिपी नहीं, क्योंकि यह घटना किसी कौने में नहीं हुई'' (प्रेरितों 26:26)।

पौलुस अपने मुकद्दमे को इस तथ्य के आधार पर पेश करता है कि न तो यीशु के चमत्कार और न ही सुसमाचार के आरंभिक प्रचारकों के चमत्कार गुप्त में किए गए थे। इसलिए ये चमत्कार उनके परमेश्वर के प्रवक्ता होने की प्रामाणिकता को साबित करते हैं। ऐसे चमत्कारी कामों से इंकार नहीं किया जा सकता था। इस कारण हमें इस यीशु के संबंध में, और इतने सारे लोगों के उसे मान लेने के संबंध में निर्णय लेना पड़ेगा। यदि हम उसे जो वह है और जो कुछ उसने किया, मान लेते हैं, तो वह हमारे जीवनों को भी वैसा ही बना देगा।

यीशु के चमत्कारों को सब लोगों ने देखा था। चेलों ने दावा किया कि मसीहियत की बुनियाद यीशु था। यीशु के उन चमत्कारी कामों से जो परमेश्वर की ओर से हुए थे, उसका परमेश्वर की ओर से होना साबित हो गया था। पतरस ने ऐलान किया, 'हे इस्राएलियो, ये बातें सुनो, यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो' (प्रेरितों 2:22)। यरूशलेम के जिन लोगों के साथ पतरस बात कर रहा था वे इस बात का इंकार नहीं कर सकते थे कि यीशु ने उनके बीच में बड़े-बड़े काम किए थे। परमेश्वर ने यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था (प्रेरितों 10:38)।

पिन्तेकुस्त का आश्चर्यकर्म यरूशलेम नगर को दिखाया गया था। पिन्तेकुस्त वाले दिन एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे (यानी प्रेरित) बैठे थे, गूंज गया (प्रेरितों 2:1-2)। जब यह शब्द हुआ तो वहां भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये (यानी प्रेरित) मेरी ही भाषा में बोल रहे है (प्रेरितों 2:6)। बड़ी गूंज यरूशलेम के बहुत से लोगों ने सुनी थी। भीड़ के लोगों ने प्रेरितों को उन भाषाओं में बोलते हुए सुना था जो उन्होंने कभी सीखी नहीं थी (प्रेरितों 2:8)। इसलिए यह चमत्कार कोई गुप्त में हुई बात नहीं थी। बल्कि सब के सामने हुआ था।

यरूशलेम में लंगड़े आदमी के साथ हुए चमत्कार का सबको पता था। चमत्कार दिखाने का मक्सद था। हम नहीं जानते कि सुन्दर नामक द्वार वाले लंगड़े व्यक्ति को प्रेरितों 3 अध्याय तक जब पतरस और यूहन्ना प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे, यीशु द्वारा चंगा क्यों नहीं किया गया था। इसी अवसर पर पतरस ने उस लंगड़े से कहा था, यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर (3:6)। वह आदमी उठा, चलने लगा, और उछलता हुआ परमेश्वर की स्तुति करने लगा था। सब लोगों ने उसे चलते-फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए देखा (3:9)। ये सब लोग, जो कुछ हुआ था उसे जानने के लिए उनकी तरफ भागे। इस आश्चर्यकर्म से पतरस को यह प्रचार करने के लिए लोग मिल गए कि यीशु ही मसीह और परमेश्वर का पुत्र है। इस प्रकार पतरस और यूहन्ना के यीशु के मान्य वक्ता होने की पुष्टि हुई।

चमत्कारों से सार्वजनिक रूप में सब लोगों में प्रेरितों की गवाही साबित हुई। प्रेरितों को परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ की आज्ञा देने का अधिकार देने का वचन दिया गया था। यीशु ने प्रतिज्ञा की थी, परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे (प्रेरितों 1:8)। लूका द्वारा मसीहियत की सफाई में बताते हुए प्रेरितों के जीवनों में इस सामर्थ के काम करने की बात सबसे स्पष्ट है। मसीहियत के आरंभ से ही साबित हो गया था कि प्रेरितों को परमेश्वर की ओर से भेजा गया है। पिन्तेकुस्त वाले दिन के बाद से 'सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के

द्वारा प्रगट होते थे (प्रेरितों 2:43)। परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उनमें जा मिले; तौभी उनकी बड़ाई करते थे (5:13)। परमेश्वर द्वारा चमत्कारों की इस बड़ी गवाही दिए जाने से विश्वास करने वाले बहुत से पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में बड़ी संख्या में मिलते रहे (5:14)। यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए (5:15)। यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर इक्ट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे (5:16)।

आज चाहे हम ने चमत्कार होते हुए न देखें हों परन्तु हमारा विश्वास उन लोगों की गवाही पर आधारित है जिन्होंने इन चमत्कारों को अपनी आंखों से देखा और इनके बारे में अपने कानों से सुना था। इस कारण लूका सब मसीही लोगों की ओर से थियुफिलुस को प्रेरितों के काम की पुस्तक की सफाई देते हुए लिख रहा है (देखें 1:1-3; लूका 1:1-4)।

जिज्ञासु मन रखें

सी. पियर्स ब्राउन

हम में से जो लोग प्रचार करने और लिखने व सिखाने का कार्य करते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वे लोगों को वही बातें जो हमारे प्रभु के द्वारा अधिकृत हैं। जो लोग सुनते और पढ़ते हैं वे इन दो बातों का ध्यान रखें कि वे क्या सुनते हैं और कैसे पढ़ते हैं (मत्ती 4:24; लूका 8:18)।

सीखने का शायद सबसे बुनियादी नियम यही है कि हमारे अंदर जिज्ञासु मन का होना आवश्यक है। मैं इस बात को मानता हूं कि एक आम बच्चे में जिज्ञासु मन होता है। चूहों की चार टांगे क्यों होती हैं? से लेकर पानी गीला क्यों होता है? जैसे हर सवाल का जवाब चाहते हैं। मुझे यह भी लगता है कि हमारा सामाजिक सिस्टम, परिवार की शैली सिखाने की तकनीकें और कई अन्य बातों से जिज्ञासु मन का गला घोटा जाना या उसे पथ भ्रष्ट करना संभव है। इसलिए हमें न केवल अपनी बाइबल की क्लासों में बल्कि घरों में, स्कूल में और हर जगह इसे बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। हर क्लास या परिस्थिति में जहां इसे बढ़ावा दिया जा सकता है, वहां शिक्षक को चाहिए कि छात्रों को बाइबल में से या बाइबल के बाहर किसी भी परिस्थिति में कौन, कब, क्या, कहां, क्यों, कैसे और तो क्या हुआ के सवाल पूछें? बेशक इनमें से हर सवाल हर परिस्थिति के लिए उपयुक्त है, परन्तु शिक्षक पूछेंगे, छात्रों को पता होना चाहिए कि वे क्यों पूछ रहे हैं और छात्रों को अपने स्वयं के अध्ययन में और अन्य हर प्रकार की परिस्थिति में ऐसे सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा तो वे पाएंगे कि उनका सिखाने का ढंग खुद-ब-खुद अधिक उपयोगी हो गया है क्योंकि वे व्यक्तिगत रूप में सीखने को बढ़ावा देंगे और इनसे क्लास के प्रयास कई गुना बढ़ जाएंगे।

सावधानी की एक-दो बातें आवश्यक हैं। पहले किसी भी प्रकार के गंभीर प्रश्न पूछे जाने को हतोत्साहित न करें। यदि छात्र इस बात पर हैरान होता है कि परमेश्वर कहां से आया? तो उसे कभी इस प्रकार से जवाब न दें, कैसा बेतुका सवाल है। बेशक, परमेश्वर कहीं से नहीं आया। वह सदा से था। यदि कोई पूछता है कि आपको कैसे मालूम कि परमेश्वर है? तो यह उत्तर कभी न दें, मूर्ख की प्रमाण के द्वारा यह बता सकता है कि परमेश्वर है, या विश्वास करने वाला व्यक्ति ऐसे सवाल नहीं करता। तुम्हें इसे विश्वास से मानना होगा।

प्रचारक कई बार इन सवालों का इस्तेमाल करते हुए लगभग किसी भी विषय पर कई-कई सरमन दे सकते हैं। वे बपतिस्मे, प्रभु-भोज, कलीसिया के संगीत, चंदा देने, आराधना की बातों तथा परमेश्वर के प्रति हमारी सेवा जैसे विषयों पर बहुत अच्छे सरमन दे सकते है। बाइबल के अनुसार बपतिस्मा क्या है और आपको कैसे मालूम ? बपतिस्मा किसे दिया जाना चाहिए? कब दिया जाना चाहिए? बपतिस्मा कैसे दिया जाना चाहिए और इस तरीके से क्यों दिया जाना चाहिए? बपतिस्मा क्यों दिया जाना आवश्यक है? क्या हर क्यों का जवाब इसलिए कि साथ-साथ के कारण है? क्या आपको दोनों की आवश्यकता है। क्यों? सहित शृंखला से बढ़कर बपतिस्मे पर इससे आसान, अधिक सामर्थी और आसानी से रखे जाने वाले सबक और क्या हो सकते हैं? कोई इनमें से किसी भी विषय पर और किसी भी अन्य विषय पर बड़े आसान, सामर्थपूर्ण ढंग से, सामर्थी और आसान सबक दिए जा सकते हैं।

पर अब मैं यहां एक मुख्य बात पर जोर देने की कोशिश कर रहा हूं वह यह है कि प्रचारकों और शिक्षकों को अपने छात्रों और छात्राओं को किसी भी विषय पर जिसका वे अध्ययन करते हैं, ऐसे सवाल सिखाने आवश्यक है। जब भी आप इस फॉरमेट के साथ कोई सरमन या लैसन देते हैं तो जो आप कर रहे हैं उन्हें बताएं और उन्हें सब बातों में ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

यदि हम इस संबंध में कि परमेश्वर ने क्या कहा है, दूसरों के अंदर जिज्ञासा उत्पन्न करने में सहायक हो सके बल्कि लोगों, कामों और अपने संबंधों के बारे में भी तो हमारी समस्याएं अपने आप ही सुलझ जाएंगी। हे प्रचारकों, हे शिक्षकों और हे पाठको : किसी भी क्लास या परिस्थिति में जहां आप जिज्ञासु मन को प्रोत्साहित कर सकते हो, दूसरों को ऐसा मन रखने में सहायता करो।

आपने सुना होगा

जॉन स्टेसी

आपने सुना होगा कि कुछ लोगों का कहना है कि पहली शताब्दि के मसीही लोगों की तरह आज भी लोग अन्य-अन्य भाषाओं में बोल सकते हैं। जो लोग ऐसा विश्वास रखते हैं, वे अपनी बात को सिद्ध करने के लिये मरकुस 16:17-18 का हवाला देते हैं। वे 18 पद में लिखे इन शब्दों पर जोर देते हैं जहां लिखा है कि वे नई-नई भाषा बोलेंगे। पर उसी

जगह पर कुछ अन्य चिन्हों का वर्णन भी हमें मिलता है, जो विश्वासियों में, अन्य-अन्य भाषाओं के बोलने के साथ-साथ पाए जाते थे। क्या वे लोग उन चिन्हों को भी मानते हैं? क्या वे दुष्टात्माओं को निकाल सकते हैं? क्या वे सांपों को उठा सकते हैं? क्या वे जहर या कोई अन्य नाशक वस्तु पी सकते हैं? क्या वे बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा कर सकते हैं? यदि वे मरकुस 16:17, 18 में लिखे एक चिन्ह को कर सकते हैं, तो फिर वे अन्य सभी चिन्हों को भी अवश्य ही प्रमाणित कर सकते हैं।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक के दूसरे, आठवें, दसवें और उन्नीसवें अध्यायों में हम कुछ ऐसी घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं जिनमें लोगों ने अन्य-अन्य भाषाओं में बोला था। उन्हें यह सामर्थ स्वयं परमेश्वर ने दी थी, और प्रेरितों द्वारा उनके ऊपर हाथ रखे जाने से उन्हें अन्य-अन्य भाषाएं बोलने की सामर्थ प्राप्त हुई थी। किन्तु इन सभी घटनाओं में हम यह पाते हैं कि उन सभी लोगों को सामूहिक रूप से अन्य-अन्य भाषाएं बोलने की सामर्थ दी गई थी, व्यक्तिगत रूप से एक-एक को नहीं, जैसे कि आज कहा जाता है। ऐसे ही यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि उन सभी घटनाओं में उन लोगों को अन्य-अन्य भाषाएं बोलने का दान स्वयं परमेश्वर अपनी इच्छा से लोगों को देता था। कहीं पर भी बाइबल में हम यह नहीं पढ़ते कि इस दान को प्राप्त करने के लिये लोगों ने प्रार्थना की थी।

बपतिस्मा ले लेने के बाद

यदि आपने अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लिया है, तो प्रभु ने आप को अपनी कलीसिया (मंडली) में मिला लिया है, (प्रेरितों 2:41, 47)। सो अब आप को एक ऐसा खजाना मिल गया है जिसे अन्य लोग भी प्राप्त कर सकते है। जो आप को मिला है उसे आप दूसरों को भी दें। क्योंकि उनके साथ उसे बांटने में आपका आनन्द और भी बढ़ जाएगा।

किन्तु इससे पहिले कि आप अन्य लोगों को नए नियम की मसीहीयत के विषय में बताएं यह बड़ा ही जरूरी है कि आप निश्चित रूप से यह जान ले कि आप स्वयं उसके बारे में अच्छी तरह से जानते हैं। जो आप दूसरों को सिखाना चाहते हैं उसे पहले आप बाइबल के प्रकाश में अच्छी तरह से जांच लें ताकि जो आप बताएं वह कोई गलत शिक्षा न हो, किन्तु बाइबल की शिक्षा के अनुसार ही हो।

सब बातों को अच्छी तरह से समझ लेने के बाद, अर्थात कलीसिया क्या है, और किस प्रकार उसका सदस्य बना जा सकता है, आप अपने सब मित्रों तथा संबंधियों को अपने उद्धार के संबंध में बता सकते हैं।

बाइबल में से पढ़कर आप उन्हें बता सकते हैं, कि पाप क्या है (1 यूहन्ना 3:4), और पाप का परिणाम क्या है (यशायाह 59:1-2), और यह कि यदि पाप में ही किसी की मृत्यु हो जाए तो वह व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जा सकता (यूहन्ना 8:21)। आप उन्हें परमेश्वर के प्रेम के बारे बता सकते हैं (यूहन्ना 3:16), और यह बता सकते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्यों के प्रति अपने प्रेम के कारण ऐसा संभव किया है कि वे मसीह के

द्वारा अपने पापों से उद्धार पा सकते हैं। (रोमियों 5:8, 1 यूहन्ना 4:10)। आप उनका ध्यान इस बात पर दिला सकते हैं, कि यीशु ने कहा है कि, जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस 16:16)। आप उन्हें यह भी बता सकते हैं कि जब वे अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेंगे। (प्रेरितों 2:38) तो प्रभु उन्हें अपनी कलीसिया में अर्थात् अपने उद्धार पाए हुए लोगों की मण्डली में मिला लेगा, जैसे कि उसने आपको मिला लिया है। (प्रेरितों 2:47)।

यह आप के लिये कितनी बड़ी खुशी की बात होगी कि आप अपने मित्रों और संबंधियों को पुरुष और स्त्रियों की (प्रेरितों 5:14) प्रभु के वचन की शिक्षा देंगे, और उन्हें बपतिस्मा देंगे।

अपने उद्धार को पाने से आनन्दित होकर मनुष्य कि यह इच्छा होती है, कि वह परमेश्वर की आराधना तथा स्तुति करे। वह अपने उद्धार के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहता है और इसलिये उसकी उपासना करना चाहता है।

आराधना कौन कर सकता है?

मनुष्य अपने स्वभाव से ही एक उपासक है। उस से उपासना करने को कहने की आवश्यकता नहीं है। पर उसे यह जानने की आवश्यकता है, कि उपासना किसकी और कैसे करनी चाहिए।

जब कोई मनुष्य एक मसीही बन जाता है, तो वह स्वयं अकेले भी उपासना कर सकता है। परमेश्वर के साथ संगति रखने के लिये किसी विशेष संख्या में उसके पास आने की आवश्यकता नहीं होती। किन्तु फिर भी जब किसी एक स्थान में दो या दो से अधिक लोग कलीसिया के सदस्य बन जाते है तो उपासना करने के लिये उन्हें एक स्थान पर एक साथ जमा होना चाहिए। क्योंकि अब वे एक मण्डली है, अब अकेले उपासना करने का कोई कारण नहीं है।

उपासना कैसे करनी चाहिए?

क्योंकि हमारी उपासना का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर को प्रसन्न करना और उसी की स्तुति करना होता है, इसलिये परमेश्वर ही हमें बता सकता है कि उसे प्रसन्न करने के लिये जो उपासना हम करते हैं, उसे कैसे करना चाहिए और कब करना चाहिए और किस तरीके से करना चाहिए। उपासना मनुष्य की नहीं, परन्तु परमेश्वर की होनी चाहिए। इसलिये हमारा ध्यान, मनुष्य को नहीं परन्तु परमेश्वर को प्रसन्न करने की ओर होना चाहिए। जो वस्तु मनुष्य को अच्छी लगती है या मनुष्य के विचार में जिस बात से परमेश्वर प्रसन्न होता है वही चीज परमेश्वर के निकट घृणित भी हो सकती है। (लूका 16:15)। इसलिये उपासना करने की सभी विधियाँ परमेश्वर के वचन में लिखी बातों से पूरी तरह सहमत होनी चाहिए। (यूहन्ना 1:17, यूहन्ना 4:24)।

यदि आराधना में हम कोई ऐसा काम करते हैं जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने नहीं दी है तो इससे हम यह व्यक्त करते है कि परमेश्वर यह भी नहीं जानता कि उसे आराधना में किस वस्तु की आवश्यकता है। धार्मिक बातों के संबंध में किसी ऐसे काम को करना, जिसे करने की आज्ञा न तो परमेश्वर ने दी है और न उसके विषय में उसने मना किया

है, यह मान लेना होगा कि जिस किसी बात के विषय में परमेश्वर ने नहीं बोला है वह मनुष्य कर सकता है।

परन्तु हमें यह याद रखना चाहिए कि बाइबल में जिन बातों को लिखा गया है वही परमेश्वर की इच्छा है। जो कुछ उसने इस पुस्तक में कहा है उसी को हमें उसकी मर्जी मानना चाहिए। और जो उसने नहीं कहा है उसे हमें ऐसे मानना चाहिए कि वह परमेश्वर की मर्जी है ही नहीं। अर्थात केवल वही बातें जिनका वर्णन नए नियम में विशेष रूप से हुआ है हमें परमेश्वर की आराधना में माननी चाहिए।

हमारी उपासना की सीमाओं को उसने न केवल अपनी आज्ञाओं से ही परन्तु नए नियम में वर्णित कलीसिया की उपासना के उदाहरणों से भी स्पष्ट रूप में हमें बताया है, और जो लोग मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं (मत्ती 15:9), उनकी उपासना मको वह व्यर्थ की उपासना कहता है।

उपासना करने के पांच नियम

आरंभ में प्रभु की कलीसिया की सभी मंडलियां जिनकी आराधना को नए नियम के पृष्ठों पर दर्शाया गया है, एक ही विधि से एक समान उसकी उपासना किया करती थी। (1 कुरिन्थियों 7:17)। प्रेरितों के कामों की पुस्तक के दूसरे अध्याय में हम उन लोगों के संबंध में यूं पढ़ते हैं, कि जब वे मसीह के अनुयायी बन गए थे, तो वे प्रेरितों से शिक्षा पाने में और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे। (प्रेरितों 2:42)। इन नियमों के द्वारा परमेश्वर की आराधना करने के लिये वे एक निश्चित समय पर निरंतर मिला करते थे, और इस प्रकार वे अपनी आत्मिक सेवा में लौलीन रहते थे।

ऐसे ही आज हमें भी प्रभु की आराधना करनी चाहिए। और वास्तव में, बात तो यह है, कि यदि हम परमेश्वर की उपासना किसी और ही ढंग से करते है तो हम एक बहुत बड़ी गलती करते हैं। परमेश्वर की आराधना में मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाया जाना और मानना परमेश्वर का सबसे बड़ा निरादर है। (मत्ती 15:9)।

प्रभु ने, विशेष रूप से, उपासना करने के निम्नलिखित पांच नियमों को ठहराया है, जिनका वर्णन हमें उसके नए नियम में मिलता है।

गीत गाना

एक प्रसन्नता भरे मन से गीत गाना स्वाभाविक बात है। (याकूब 5:13)। आरंभ में मसीही लोग परमेश्वर की प्रशंसा में, अपनी उपासना में, गीत गाते थे। (इफिसियों 5:19)। वे भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाकर अपने मनों के विचारों को व्यक्त किया करते थे। (कुलुस्सियों 3:16,17)। किन्तु जब वे गाते थे तो उनके गीतों के साथ किसी भी तरह के बाजे नहीं बजाए जाते थे। आरंभ के समीही लोग दाऊद द्वारा लिखे गए किसी एक भजन को या पवित्र शास्त्र के कुछ अन्य पदों को लेकर उनकी धुन या राग बना लेते थे और फिर उन्हें गाते थे। आज अक्सर संसार में सभी जगह मसीही गीत या भजनों की पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनमें से पढ़कर हम गा सकते हैं। परन्तु यदि ऐसी पुस्तकें किसी जगह उपलब्ध न हों तो आरंभ की कलीसिया की तरह हम भी आज कर सकते हैं, अर्थात् धुन बनाकर किसी एक भजन को गा सकते है।

प्रार्थना करना

प्रार्थना एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर से बातें करता है। जब हम परमेश्वर की इच्छानुसार उससे प्रार्थना करते हैं तो वह हमारी सुनता है (1 यूहन्ना 5:14), और हमारी प्रार्थनाओं का जवाब भी देता है। (1 पतरस 3:12)। प्रार्थना करने का अभिप्राय परमेश्वर को मानने से नहीं है, परन्तु प्रार्थना के द्वारा हम इस बात को प्रकट करते हैं कि हम उस पर भरोसा करते है और उस पर निर्भर करते हैं। हमें सदैव विश्वास के साथ, यह मानकर, कि जो हम मागेंगे हमें मिलेगा, प्रार्थना करनी चाहिए। परन्तु हमें सदा यह कहना चाहिए कि मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो। (लूका 22:42)। हमें अपनी प्रार्थना को मसीह के नाम से मांगना चाहिए क्योंकि परमेश्वर और मनुष्य के बीच में केवल वही हमारा बिचवई है। (1 तीमुथियुस 2:5, इफिसियों 5:20)।

बाइबल अध्ययन करना

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना या उसे पढ़ना उपासना करने की एक महान विधि है। परमेश्वर की मर्जी को जानकर उस पर चलने की इच्छा को मन में रखना मनुष्य के लिये प्रभु की ओर से एक बहुत बड़ी आशीष की बात है। (यूहन्ना 7:17)। बाइबल के एक लेखक ने बिरीया में रहने वाले चेलों को भले कहकर इसलिये संबोधित किया था क्योंकि वे प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते थे। (प्रेरितों 17:11, 12)।

चंदा देना

परमेश्वर के कार्य के लिये अपने धन में से देना भी उसकी आराधना है। फिलिप्पी नामक स्थान में जो कलीसिया थी उसकी ओर से पौलुस को, सुसमाचार प्रचार करने के कार्य के लिये, चंदा इकट्ठा करके भेजा गया था। और पौलुस ने उस चंदे के विषय में यूं कहा था, कि वह तो सुगंध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है। (फिलिप्पियों 4:15-19)। अपने चंदे के द्वारा हम सुसमाचार प्रचार करने के महान कार्य में सहायक बनते हैं। चंदा देकर हम कलीसिया को इस योग्य बनाते हैं, कि वह गरीबों की सहायता कर सके (1 कुरिन्थियों 16:1, 2) और अन्य आर्थिक भार उठा सके (जैसे कि कलीसिया के जमा होने के स्थान का किराया आदि) या उन वस्तुओं को मोल ले सके जिनकी कलीसिया को आवश्यकता हो सकती है (जैसे कि बाइबल, मसीही साहित्य आदि)। किन्तु प्रभु उन से प्रसन्न होता है जो उसके कार्यों के लिए हर्ष से देते है (2 कुरिन्थियों 9:7), वह हमारे देने से हमारे प्रेम की सच्चाई को परखता है। (2 कुरिन्थियों 8:8)। मूसा की व्यवस्था के आधीन यहूदी लोगों को अपनी आमदनी का दसवां भाग प्रभु को देने की आज्ञा दी गई थी। आज एक मसीही को कितना चंदा देना चाहिए इसके लिये प्रभु ने कोई विशेष सीमा नियुक्त नहीं की है। उसने मनुष्य को स्वतंत्रता दी है, और केवल उदारता से देने की आज्ञा दी है (रोमियों 12:8), और कहा है, कि प्रत्येक अपनी आमदनी के अनुसार दे। (1 कुरिन्थियों 16:2)।

प्रभु-भोज लेना

जब आराधना में प्रभु भोज लिया जाता है तो वह एक गंभीरता का समय होता है। प्रभु यीशु ने अपने दुखों और पापियों के लिये अपनी मृत्यु को याद दिलाने के लिये इस भोज

की स्थापना की थी। प्रत्येक मसीही जन को प्रभु यीशु के उस बलिदान को स्मरण रखने के लिये जिसे उसने हमारे पापों के लिये दिया था, हर एक रविवार (एतवार) को प्रभु-भोज में अवश्य ही भाग लेना चाहिए।

प्रभु-भोज को लेने के समय, रोटी को लेकर उसके लिये धन्यवाद देना चाहिए और फिर मसीह की देह को याद करने के लिये उस रोटी में से एक छोटा सा टुकड़ा तोड़कर खाना चाहिए। यह रोटी अखमीरी, अर्थात खमीर के बिना होनी चाहिए। फिर, उस गिलास या प्याले को लेकर जिसमें दाखरस (अंगूर का रस) है उसके लिये धन्यवाद देना चाहिए और उस दाखरस में से मसीह के लोहू को याद करने के लिये थोड़ा सा पीना चाहिए। (मत्ती 26:26-29, 1 कुरिन्थियों 11:23-34)।

प्रभु भोज प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन अर्थात रविवार को लिया जाता है। (प्रेरितों 20:7 तथा 2:42)। केवल यही एक ऐसा दिन है जिसमें प्रभु भोज लिया जाना चाहिए। और किसी दिन उसे नहीं लेना चाहिए।

प्रभु भोज में भाग लेने के उद्देश्य को प्रभु यीशु ने स्वयं ही बड़े अच्छे ढंग से अपने इन शब्दों में यह कहकर व्यक्त किया था, कि मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। (1 कुरिन्थियों 11:25)। रोटी में से खाना मसीह की देह की सहभागिता है, और दाखरस में से पीना मसीह के लोहू की सहभागिता है। (1 कुरिन्थियों 10:16)। प्रभु भोज प्रभु के बलिदान की एक यादगार है।

प्रभु भोज लेने से पाप नहीं मिटते हैं, परन्तु उसमें भाग लेकर हम इस बात को व्यक्त या घोषित करते हैं, कि मसीह ने अपने आपको हमारे पापों के लिए बलिदान किया था। प्रभु भोज को ऐसे नहीं लेना चाहिए कि वह कोई पवित्र प्रसाद है। परन्तु उसमें भाग लेकर मसीह की देह और उसके लोहू को याद करना चाहिए।

जब एक मसीही व्यक्ति अन्य मसीही भाई-बहनों के साथ एकत्रित नहीं होता है और उसके साथ प्रभु भोज में सहभागी नहीं होता है, तो ऐसा करके वह पाप करता है, (इब्रानियों 10:25)। यदि कोई मसीही किसी कारणवश प्रभु के दिन, अर्थात् सप्ताह के पहिले दिन, (प्रेरितों 20:7), अपने अन्य मसीही भाई-बहनों के साथ इकट्ठा नहीं हो सकता, तो ऐसा होना चाहिए, यदि संभव हो, कि वह अकेले ही प्रभु भोज को ले।

आदमी के लिए उसके जैसा सहायक होने का क्या अर्थ है?

बैटी बर्टन चोट

सब प्राणियों की सृष्टि का कार्य पूरा हो जाने के बाद आदम ने हर प्राणी का नाम रखा, परन्तु आदम के लिए कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खा सके (उत्पत्ति 2:20)। परमेश्वर ने आदमी को अपने ही स्वरूप पर बनाया, उसे समझ, भावनाएं दी और एक अनन्त आत्मा दी ताकि वह परमेश्वर की सृष्टि से प्रेम रखे और उसके साथ उसका

संबंध बना रहे। अब आदमी को भी लगता था कि प्राणियों में से उसके जैसा कोई नहीं है, जिसके साथ मिलकर वह परमेश्वर की अद्‌भुत सृष्टि की प्रशंसा कर सके।

वास्तव में परमेश्वर की योजना के अनुसार आदमी के रूप में आदम की रचना अधूरी थी। अकेला रहकर बेशक वह काम तो कर सकता था, जिससे लगे कि उसमें अपने आप में कोई कमी नहीं है, पर परमेश्वर को मालूम था कि उसे लैंगिक, शारीरिक मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आत्मिक रूप में पूर्ण होने के लिए एक साथी की आवश्यकता है। सो जब आदम को अकेलापन महसूस हुआ तो परमेश्वर ने उसे गहरी नींद सुला दिया और उसकी पसली में से एक निकाल ली। परमेश्वर ने स्त्री को मिट्‌टी में से नहीं, बल्कि पुरुष की पसली से बनाया और उसे उसके पास ले आया। आदम ने कहा, अब यह मेरी हड्‌डियों में की हड्‌डी और मेरे मांस में का मांस है, सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकली गई है (उत्पत्ति 2:23)।

आज संसार में हम उन पुरुषों और उन स्त्रियों के विषय में सुनते है जो विवाह नहीं करते और अकेले रहने को प्राथमिकता देते हैं। कुछ लोग विवाह करने के बजाय अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित कर देते हैं ताकि परमेश्वर उनके मानवीय साथ के न होने की कमी को पूरा कर दे।

कुछ अन्य मामलों में कई बार परिस्थितियां विवाह न करने को विवश कर देती है और इसके कारणों को मानना ही पड़ता है। परन्तु अधिकतर पुरुष और स्त्रियां मानवीय आवश्यकता को पूरा करने और परिवार बनाने की इच्छा से विवाह करते हैं। पुरुषों को पत्नी के प्रेम और देखभाल की आवश्यकता होती है जो उनके घर को चलाने में सहायता करे। स्त्रियों को पति की सुरक्षा और साथ की आवश्यकता होती है। दोनों की स्वाभाविक आवश्यकता यह है कि वे चाहते हैं कि उनके बाद उनकी संतान हो। मानवीय प्रबंध में यह महत्वपूर्ण आवश्यकताएं परमेश्वर ने ही डाली हैं और इन्हें आसानी से अनदेखा नहीं किया जा सकता।

पुरुष और जानवरों की तुलना में कोई भी स्त्री किसी भी पुरुष के जैसी ही मिलेगी, केवल इसलिए कि वह भी मनुष्य है। परन्तु हम जानते हैं कि आमतौर पर कई बार कोई विशेष पुरुष और स्त्री आपस में मेल नहीं खाते हैं। उनके कदकाठी में अन्तर हो सकता है। कई बार हम किसी पढ़े-लिखे आदमी का विवाह किसी अनपढ़ स्त्री से होते हुए देखते हैं जिसका संसार में इसके अलावा और कोई उद्देश्य नहीं होता कि केवल जीना है। कई बार हम देखते हैं कि कोई बहुत ही गंभीर और समझदार स्त्री अपने जीवन में बहुत बड़ी भूल कर बैठती है जब वह किसी तंग सोच वाले आदमी को अपना पति बनाना चुन लेती है। यह बहुत ही सोच समझकर विचार करने वाली बात है कि जब जीवन-साथी का चयन करना हो तो दोनों के जीवन के सब पहलुओं पर विचार किया जाए। आनन्द प्राप्ति के लिए वैसा ही होना आवश्यक है, जैसा परमेश्वर ने चाहा था कि स्त्री और पुरुष मेल खाते हो।

स्त्री सहायक कैसे हो सकती है? जैसे पहले भी कहा गया है कि वह तो अपने पति की जीवन भर की साथी है। आरंभ से तो परमेश्वर ने नहीं चाहा था कि तलाक हो।

उसकी योजना थी कि जीवन भर के लिए एक स्त्री के लिए एक पुरुष हो। इस सच्चाई को और पक्का करते हुए यीशु ने कहा कि क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें बनाया, उसने आरंभ से नर और नारी बनाकर कहा, कि इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे? सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं, इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे (मत्ती 19:4-6)।

जीवन भर के साथी होने के कारण वे एक दूसरे के ज्ञान और समझ में बढ़ेंगे। वे अकेले नहीं बल्कि इकट्ठे, मानवीय आशीष का महत्वपूर्ण भाग बनेंगे। यदि उनकी जोड़ी बिल्कुल मेल खाती है तो जवानी के फैसले करने और चुनौतियों के लिए वे एक-दूसरे की सामर्थ और सहायता बनेंगे। बुढ़ापे की कमजोरी और बीमारी में वे एक-दूसरे का सहारा बनेंगे।

सहायक जो उससे मेल खा सके का विचार यह था कि आदमी की खामियों को दूर करने (जैसे मां की भूमिका में), या जीवन के उसके काम और जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए उसकी सहायता करने के योग्य औरत ही है। क्या कोई ऐसा किसान है जिसे फसल को बोने, उसकी रखवाली करने और कटाई करने के लिए अपनी पत्नी और बच्चों की आवश्यकता न हो? कितने ही छोटे व्यापारी और कारोबारी अपना हिसाब-किताब रखने या नये ऑर्डर बुक करने और दुकान चलाने के लिए अपनी पत्नी पर निर्भर होते हैं? नये नियम में अक्विल्ला तम्बू बनाने का काम करता था और उसकी पत्नी प्रिसकिल्ला सहायता किया करती थी (प्रेरितों 18:2, 3)।

वचन के अनुसार बच्चों को संसार में लाना और उनका पालन-पोषण करना, पति की संभाल करना और घर की देखभाल करना पत्नी का प्रमुख कार्य है। तीतुस को पौलुस ने लिखा है, जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि घरबार संभालें अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें (तीतुस 2:4, 5)। तीमुथियुस को आज्ञा मिली कि वह जवान विधवाओं (उन जवान स्त्रियों को भी जिनका अभी विवाह नहीं हुआ) को आज्ञा दें कि वे विवाह करें, और बच्चे जनें और घरबार संभालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें (1 तीमुथियुस 5:14)।

पति के परिवार के लिए कमाई करने पर, बच्चों को जन्म देना और उनका पालन-पोषण करना और घर की देखभाल करना, यदि स्त्री इस काम को सही ढंग से करती है तो उसका समय बिल्कुल अच्छा गुजरेगा। कुछ लोग जो स्त्री की जिम्मेदारी के महत्व को समझते नहीं है वे उसके काम को नौकरानी का काम कहकर उसकी कदर कम कर देते हैं। परन्तु परमेश्वर स्त्री को इससे बढ़कर क्या महिमा देता कि वह अपने से आगे की पीढ़ियों के जीवनों तथा आत्माओं को अनन्तकाल के लिए तैयार कर सकती है। जब हम संसार की नैतिकता के संबंध में समस्याओं की ओर ध्यान करते हैं जिसमें बढ़ रही प्रताड़नाएं भी शामिल हैं तो हमें पता चलता है कि इस सब का कारण यही है कि स्त्रियों ने घरबार संभालने का काम छोड़ दिया है जिसके कारण घरों के घर तबाह हो रहे हैं बात यही है, क्योंकि जिस गति से स्त्रियां घर का कामकाज छोड़कर बाहर

जाकर आदमी का काम संभाल रही हैं, उतनी ही गति से संसार की समस्याओं में बढ़ोतरी हो रही है। इस सब का कारण जो भी हो, स्त्री के लिए और कोई काम कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो, परन्तु पत्नी और मां के लिए परमेश्वर की ओर से दिए कार्य को पूरा न करने के कारण घरों के घर बर्वाद हो रहे हैं।

बच्चों की देखभाल और घर में आदमी को उससे मेल खाती सहायक बनने के साथ स्त्री को चाहिए कि वह अपने पति के लिए मज़बूत साथी बनकर रहे। उसे वैसे ही कपड़े पहनने चाहिए जो उसके पति को पसंद हो। उसे चाहिए कि वह अपने पति की सोच के अनुसार अपने आपको ढाल ले ताकि वे अपने संसार और शेष संसार की समस्याओं से परिचित हो। उसे अपने पति की भावनाओं को समझना चाहिए, ताकि उसके जीवन में खुशियां आ सकें। सफल पत्नी अपने पति की पक्की दोस्त और उसकी राजदार होती है।

पत्नी जो आदमी से मेल खाती है, अपने पति के परिवार के साथ अच्छे संबंध बनाती है, क्योंकि उसे मालूम है कि यदि उसने अपने पति के किसी संबंधी के साथ वैर रखा तो उनके अपने संबंध में दरार पड़ सकती है। हमें दो कोस चला जाने की प्रभु यीशु की सलाह (मत्ती 5:38-42) परिवार में मानवीय खामियों को दूर करने के लिए बहुत लाभदायक होगी।

सबसे महत्वपूर्ण यह है कि पत्नी अपने पति के साथ आत्मिक सहभागिता भी रखे। यदि पत्नी और बच्चे घर पर रहें और पति अकेला ही आराधना के लिए जाए तो इससे न तो पत्नी की ओर न बच्चों की आत्मिक उन्नति होगी। सच तो यह है कि पति की उन्नति भी वैसी नहीं होगी जैसी होनी चाहिए, क्योंकि अकेले की उन्नति हो रही होगी। परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हर किसी की आत्मिक उन्नति के लिए पूरे परिवार की उन्नति आवश्यक है। जब परिवार के सब लोग आत्मिक बातों पर आपस में बातचीत करेंगे, पवित्र शास्त्र को पढ़कर उस पर विचार करेंगे, इकट्ठे प्रार्थना करेंगे तो इस सब से वे परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ेंगे।

पतरस प्रेरित ने स्त्रियों को लिखा है, तुम्हारा शृंगार छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। इसके साथ ही पतियों को लिखते हुए वह कहता है- वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं (1 पतरस 3:4, 7)।

इफिसुस में जब पौलुस ने मसीही स्त्रियों के नाम लिखा, कि हे पत्नियों अपने अपने पतियों के ऐसे अधीन रहो जैसे प्रभु के, (इफिसियों 5:22), तो क्या उसके कहने का अभिप्राय यह था कि आदमी को परमेश्वर की ओर से अधिकार मिला है कि वह स्त्री को पांव की जूती समझे? क्या ये उसके अपने विचार नहीं हो सकते? निश्चय ही, परमेश्वर के कहने का अर्थ यह नहीं है।

जब कोई निर्णय लेना हो तो पति और पत्नी को चाहिए कि पहले उस पर विचार-विमर्श कर लें ताकि सही निर्णय ले सके। हो सकता है कि स्त्री पुरुष के निर्णय

को अधिक प्रभावित करे, परन्तु वचन में घर की अगुआई करने का अधिकार पति को ही दिया गया है।

यदि पत्नी को लगे कि लोक-व्यवहार, ज्ञान और निर्णय के संबंध में पति को सचमुच उसकी सलाह की आवश्यकता है तो उसका कर्त्तव्य है कि सहायक होने के कारण वह अपने विचार बड़े प्रेम और विनम्रता से उसे बताए। स्त्री चाहे कितनी भी ज्ञानवान क्यों न हो और उसका पति चाहे कितना भी गलत क्यों न हो, स्त्री के लिए यह बिल्कुल अच्छी बात नहीं है कि वह अपने पति पर आज्ञा चलाए। इस प्रकार व्यवहार करने से न केवल उसका पति अगुआई करने में कमजोर पड़ेगा बल्कि यह परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन भी है। यदि पति अपनी पत्नी की दादागिरी को सहन करता रहता है तो इससे न केवल उसका नेतृत्व ही कमजोर पड़ेगा बल्कि इससे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन भी होगा। हमें कभी भी यह नहीं भूलना चाहिए कि अन्त में हम सब को एक-दूसरे के साथ व्यवहार के लिए परमेश्वर को उत्तर देना है।

पति और पत्नी को एक-दूसरे के साथ कैसे रहना चाहिए, इसका बहुत सुन्दर उदाहरण हमारे प्रभु यीशु मसीह और उसकी कलीसिया के विषय में इस प्रकार मिलता है, तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने (इफिसियों 5:33)।

यीशु का जन्म, आखिर क्यों?

डॉ. एफ. आर. साहू

पृथ्वी पर समस्त मानव अशांत और पाप के अंधकार में डूबे हुए थे, कहीं पर भी कोई सहीं मार्ग दिखाई नहीं दे रहा था। लोग शांति पाने के लिये पहाड़ो की गुफाओं में तो कोई जंगल में भटक रहा था।

तभी मध्यरात्री में एक आनंद का समाचार गड़रियों के पास पहुंचा, जिसे स्वर्गदूतों ने बताया ''कि आज दाउद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है।'' (लूका 2:11)।

इस बात से हमें यही मालूम पड़ता है कि यीशु का इस धरती पर जन्म लेना सचमूच में परमेश्वर का मनुष्य जाति के प्रति महान प्रेम को प्रदर्शित करता है और परमेश्वर का यह प्रेम समस्त देशों और जातियों के लिये आनंद का समाचार था। जैसे लिखा है: ''प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।'' (1 यूह. 4:10)।

प्रभु यीशु के जन्म की भविष्यवाणियां जो यशायाह भविष्यवक्ता द्वारा की गई थी'' (यशा. 11:1-5) और ऐसे ही भविष्यवाणी मीका भविष्यवक्ता द्वारा भी की गई थी। (मिका. 5:2-4) जो बाद में पूरी होती है।

पवित्र बाइबल बताती है कि यीशु इसलिये प्रगट हुआ कि पापों को हर ले जाये। (1 यूह. 3:5)।

मसीह इसलिये आया कि हमें पापों से और गुनाहों से छुटकारा दिलाये।

पाप कर्म होता है और पाप स्वभाव में भी होता है। और पाप का दण्ड भी होता है और शारीरिक अभिलाषाओं के कारण होने वाले पाप और पाप के कारण उत्पन्न मृत्यु से हमें मुक्त कराने के लिये यीशु ने जन्म लिया था।

यीशु मानव जीवन से शैतान के कार्यों को नष्ट करने आया था। (1 यूह. 3:8)। वह इसलिये आया था ताकि

- व्यवस्था के अधिनों को मोल लेकर छुड़ाले। (गलतियों 4:4-5)।
- यीशु खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने आया था।
- यीशु जीवन देने आया था। (यूहन्ना 10:10)।

प्रियों, यह एक कटु सत्य है कि परमेश्वर ने हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हमसे व्यवहार नहीं किया और न ही हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हमको बदला दिया, परन्तु उसने हमारे पापों को हमसे उतने ही दूर कर दिया जितना की उदयाचल से अस्ताचल है। (यशायाह 59:1-2)।

अब यीशु बालक नहीं रहे और न ही उसने कभी चाहा कि हम उसके जन्मदिन को, क्रिसमस या बड़ा-दिन के रूप में मनाएं। परन्तु यीशु के जन्म-दिन को मनाने के अलावा उसके जन्म लेने के उदेश्य को जानना ही सबके लिये आवश्यक है। और हमारे लिये इससे भी अधिक आवश्यक है उसकी मृत्यु और मृतकों में से जी उठना।

हमको मालूम होना चाहिये कि यीशु के मुर्दो में से जी उठने के द्वारा ही अब हमें पापों की क्षमा, छुटकारा और अनंत जीवन की आशा मिलती है। क्योंकि यीशु स्वयं हमारे पापों के लिये मर गया और वह मर ही नहीं गया परन्तु जीवन देने के लिये वह मुर्दो में से तीसरे दिन जी उठा।

यीशु ने कहा था, ''मैं मर गया था और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूं, और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं।'' (प्रका. 1:18)।

मेरे प्रिय मित्रों, यीशु मसीह हमारा जीवता परमेश्वर है। उसका मृतकों में से जी उठना मसीहीयत की नींव है। और वह युगानुयुग एक सा है, वह कल भी था और आज भी है, और सदा रहेगा।

प्रभु यीशु आदि, अंत और अनंत है। वह सारे जगत का उद्धारकर्ता है और यही मसीह का सुसमाचार अनंत जीवन के लिये जीवित आशा है। इसलिये मत्ती रचित सुसमाचार 28:18-19 के अनुसार जो आज्ञा हमें मिली है, उसे हम औरों को भी मानने के लिये प्रेरित करें, जैसे की उसने कहा था, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है, इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओं, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन्हें वे सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है मानना सिखाओ।'' (मत्ती 28:18-19)।

प्रियों, मसीहीयत में यदि किसी बात की यादगारी मनानी है तो यीशु की मृत्यु का जिसे हम प्रत्येक रविवार प्रभु भोज, पवित्र बियारी में भाग लेकर उसके दुःख भोग मृत्यु को जिसने हमारे ही अपराधों के कारण अपनी देह को तोड़ा और हमारे ही पापों के कारण

अपने पवित्र बहुमुल्य लहू को बहाया और उसी को स्मरण करने के लिये मसीह प्रभु भोज लेते हैं। क्योंकि मसीह में मसीहीयों के लिये प्रभु की यही आज्ञा है जिसे हम लूका. 22:19-20; प्रेरितो 20:7; 1 कुरि. 11:23-25 में पढ़कर समझ सकते हैं।

प्रभु भोज और मसीहीयों के लिये कोई पवित्र और महत्वपूर्ण दिन है तो वह रविवार का दिन है जिसमें हम सबको एक साथ इकट्ठे होकर परमेश्वर की आराधना करनी चाहिये और प्रभु भोज में भाग लेकर उसकी आज्ञा का आदर करना चाहिए।

मसीहीयों के लिये बड़ा दिन रविवार का दिन है जिस दिन हम उसकी मुत्यु की यादगारी को मनाते हैं। (प्रेरितों 20:7)।

प्रियों चाहे कोई क्यों न हों परन्तु जब तक हम यीशु को अपना उद्धारकर्ता मानकर पापों की क्षमा छुटकारा, और अनंत जीवन प्राप्त नहीं कर लेते तब तक यीशु के जन्म इस प्रश्न के उत्तर को नहीं समझ सकेंगे और न ही यीशु के जन्म दिवस का क्या अभिप्राय है उसे भी समझ पाएंगे।

इसलिये विशेषकर हम सुसमाचार की सच्चाई को लोगों में बताएं जिसे सुनकर लोग विश्वास करे और यीशु को अपना उद्धारकर्ता मान सके और मसीह के जन्म के अभिप्राय को जान सके।

इसलिये अभी अवसर है यदि कोई यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करता हैं तो उसे मसीह के सुसमाचार पर विश्वास लाना चाहिये, तमाम पापों से मन फिराकर तथा यीशु का अंगीकार करना चाहिये, क्योंकि यदि ऐसा वे करते हैं तो अनंत जीवन उनका है क्योंकि यीशु मसीह में परमेश्वर की उसके लिये यही उद्देश्य है। क्या आप यीशु में विश्वास करते हैं? यदि हां, तो आज ही बपतिस्मा लेकर एक मसीह बनें। यीशु ने कहा था, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।'' (मरकुस 16:16)।

क्योंकि हम सब प्रभु के हैं
(रोमियों 14:7-9)

डेविड रोपर

सब मसीही प्रभु के हैं (आयतें 7-9)

दूसरे मसीही लोगों पर दोष न लगाने का दूसरा कारण 7 से 9 आयतों में मिलता है। हमें एक-दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए क्योंकि हम सब प्रभु के ही हैं।

आयत 7 कइयों को जानी पहचानी लगती है, क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिए जीता है, और न कोई अपने लिए मरता है। क्योंकि हम में से अपने लिए कोई नहीं जीता और न कोई अपने लिए मरता है। आमतौर पर यह सिखाने के लिए कि हम अपने आपको शेष मनुष्य जाति से अलग नहीं कर सकते, यानी भलाई को या बुराई हम सब एक-दूसरे पर उससे प्रभाव डालते हैं। यह सच्ची बात है, परन्तु संभवतया यह मुख्य विचार है जो पौलुस बताना चाहता था। उसका विचार तो यह है कि न तो जीवन में और

न मृत्यु में हम इस बात से भाग सकते हैं हम चाहे जो भी करें या जो भी हों वह सब परमेश्वर के सामने हैं।

आयत 7 को फिर से देखें और ध्यान दें कि यह आयत 8 से कैसे जुड़ी है, क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिए जीता है और न कोई अपने लिए मरता है। क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिए जीवित हैं और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं, सो हम जीएं या मरें, हम प्रभु ही के है (आयतें 7, 8) आयत 7 को इस प्रकार विस्तार दिया गया है, हम में से कोई भी अपने लिए नहीं जीता (बल्कि प्रभु के लिए), और न हम में से कोई अपने लिए मरता है (बल्कि प्रभु के लिए)। हम का अर्थ, हम मसीही लोग। आयत 7 और 8 दोनों में पौलुस के कहने का अर्थ था कि मसीही व्यक्ति अब अपना नहीं रहा, बल्कि वह प्रभु का है।

जीवन और मरन की पौलुस की बात संभवतया उस दायरे को समेटने के लिए थी, जिसमें व्यक्ति रहता है। जे.बी. फिलिप्स ने आयत 8 को इस प्रकार लिखा है, हर मोड़ पर जीवन हमें परमेश्वर से जोड़ता है और जब हम मर जाते हैं तो हम उसे आमने-सामने देखते हैं, जीयें या मारें हम परमेश्वर के हाथों में हैं।

आयत 9 में पौलुस ने जीवन और मृत्यु का अपना रूपक जारी रखा, क्योंकि मसीह इसीलिए मरा और जी भी उठा कि वह मरे हुओं और जीवतों, दोनों का प्रभु हो। मसीह इसीलिए जिया और मरा फिर दोबारा जिया ताकि जीवन और मृत्यु के पूरे दायरे के बाहर वह हमारा प्रभु हो सके।

इसलिए हमें दोष नहीं लगाना चाहिए

क्या आपने प्रभु पर निरन्तर ध्यान दिया? 7 से 9 आयतों में प्रभु, शब्द चार बार आता है। इन आयतों से कई प्रासंगिकताएं बनाई जा सकती है। क्योंकि हम प्रभु के हैं, इसलिए हमें अपने आपको प्रसन्न करने के लिए नहीं, बल्कि उसे प्रसन्न करने के लिए जीना चाहिए, हम चाहे जीएं या मरें, जैसे भी हो, हमारे विचार उस पर केन्द्रित होने चाहिए (देखें फिलिप्पियों 1:21-23)। परन्तु पौलुस का फोकस अभी भी इसी पर था कि हमें एक दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए। जेबी ने अगली बात को समझाने के लिए 7, 8, 9 आयतों को जोड़ दिया, यह (जो अभी-अभी कहा गया) इसलिए भी है कि तुम्हें किसी भाई पर दोष कभी नहीं लगाना चाहिए (आयत 10क)।

यह तथ्य कि मसीही लोग प्रभु के हों, इस प्रकार के प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करने वाला होना चाहिए, क्योंकि प्रभु ने किसी भाई को अपना मान लिया है, तो हम उस पर दोष क्यों लगा रहे हैं? हम भी उसे स्वीकार क्यों नहीं कर लेते? आयत 4 में हमें याद दिलाया गया है, जहां पौलुस ने पूछा, तू कौन है, जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से संबंध रखता है। परन्तु यहां पर तस्वीर थोड़ी सी बदली गई है। यहां व्यक्ति अब किसी दूसरे के सेवक की आलोचना नहीं कर रहा है, बल्कि हम एक सेवक को स्वामी के घर एक साथी सेवक पर दोष लगाते देखते हैं। कितनी हिम्मत की बात है।

क्या यह काफ़ी है?

सूज़ी फ्रैड्रिक

जब एक स्त्री यह समझ लेती है कि वह एक धार्मिक जीवन व्यतित कर रही है, तब यह स्वाभाविक है कि वह बाइबल की ओर देखती है कि परमेश्वर उससे क्या चाहता है? उसे बहुत सारी ऐसी स्त्रियों के उदाहरण मिलते हैं जो धार्मिक थीं जैसे कि सारा, जिसका परमेश्वर में बहुत बड़ा विश्वास था, तथा मारथा और मरियम जो कि मेहमान नवाज़ी यानि आदर सत्कार करने में पीछे नहीं रहती थीं तथा यीशु और उसके चेलों की उन्होंने बहुत सेवा की थी। दोरकास ने पूरे जीवन भर लोगों की सहायता की तथा प्रिसकिल्ला सुसमाचार फैलाने में पौलूस की सहायता करती थी। बाइबल हमें यह भी सलाह देती है कि हमें अपने पतियों से प्रेम करना चाहिए तथा अपने बच्चों से प्रेम करना और उनकी अच्छी देखभाल करनी चाहिए। दूसरों को यीशु के विषय में बताना तथा सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए तथा इस सब में धीरज़ रखने की बहुत आवश्यकता है। संयम तथा उचित व्यवहार की भी बहुत आवश्यकता है। जो भी स्त्री ऐसा करेगी उसके परिवार में प्रसन्नता होगी। परन्तु क्या यह सब करने से वह अनन्त जीवन, जो कि स्वर्ग में मिलेगा, उसको भी प्राप्त करेगी?

बाइबल का नया नियम हमें बताता है कि कोई भी व्यक्ति अनन्त जीवन को कमा नहीं सकता। यदि कोई व्यक्ति एक हज़ार अच्छे या भले कार्य कर ले या तीर्थ यात्राएं कर लें तौ भी वह अपने पापों से मुक्ति नहीं पा सकता। (इसके लिये देखिये-तीतुस 3:5; इफिसियो 2:4-10)। परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह यीशु के द्वारा हमें पापों से मुक्ति दे सकता है, ''क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियो 6:23)। जब हम विश्वास करके बपतिस्मे के द्वारा यीशु को अपने आप को सौंप देते हैं, तब हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं'' तथा हम परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं। (प्रेरितों 2:38; गलतियों 3:26-27)। हमारे बपतिस्मे के पश्चात जब हम निरन्तर परमेश्वर की आराधना करते तथा उस पर भरोसा रखकर उसकी सेवा करते हैं, तब उसका अनुग्रह हमारे पापों को लगातार क्षमा करता रहता है। (1यूहन्ना 1:7)।

मसीही बन जाने के पश्चात हमें उन बातों को करते रहना चाहिए जो धार्मिकता से जुड़ी हुईं हैं ताकि हम परमेश्वर को प्रसन्न कर सकें। यदि हम पापों से उद्धार पाना चाहते हैं तथा अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं तब हमें यीशु में बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, ताकि हमारे पाप क्षमा हो सकें। (यूहन्ना 3:3-5; मरकुस 16:15-16, 2 थिस्सलुनीकीयों 1:8; प्रेरितों 2:38)। मेरा आपसे यह आग्रह है कि आप अपनी बाइबल को पढ़िये तथा खोजिये कि परमेश्वर की इच्छा आपके लिये क्या है? आज मनुष्य के लिये केवल एक ही आशा है और वो है प्रभु यीशु मसीह तथा उसका सुसमाचार (रोमियों 1:16)।